International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 8 || August 2025 || PP. 266-268

प्रथम दशकक यात्रा साहित्यमे प्रकृति–चित्रण

अर्चना कुमारी

शोधार्थी
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ. सुनीता झा

शोध–निर्देशिका
सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग
मिल्लत कॉलेज, दरभंगा

समय परिवर्तनशील अछि । जाहि कारणसँ आधुनिककालमे मारिते रास परिवर्तन सभ दृष्टिगोचर होइछ । मुदा मानवक प्रकृति–प्रेम भौतिकवादी सुख पएबाक दिशामे आहत होइतहु, कोनो ने कोनो रूपमे बचल अछि । जकर प्रमाण प्रथम दशकक यात्रा–साहित्यमे भेटैत अछि । ओना तऽ प्रकृति जतबा मानवक रक्षा करबामे अपन सम्पूर्ण कला–कौशल उड़ेलि देलक, मनुक्ख ओतबहि ओकरा विद्रूप करबाक लेल तत्पर भऽ गेल । मनुक्खक स्वार्थान्धता एतेक बढ़ि गेलैक जे ओ ओकर रूप, सौन्दर्यक संग ओकर अस्तित्व धरि छीनि लेबाक लेल तत्पर भऽ गेल । मुदा एकर विपरीत रचनाकार लोकनि आरंभिककालहिसँ प्रकृतिक सौन्दर्य आ ओकर उदारताकेँ मानव जीवनक अविच्छिन्न अंग मानैत अपन काव्यमे सर्वोपरि स्थान देलनि । विशेष अवसर, विशेष स्थल, आकि कोनो विशेष कार्यसँ लोक यात्रा करैत अछि आ' तेँ सोद्देश्य कएल गेल यात्राकेँ रचनाकार लोकनि मोन रखबाक लेल यात्रा–साहित्यमे स्थान दैत छथि । ओहि यात्राक क्रममे प्रकृतिक संग साक्षात्कार करबाक उद्देश्य राखब, एक गोट विशिष्ट आनन्दक बोध करब थिक ।

'देश–विदेश' यात्रा–वृतांतमे सिंहेश्वर स्थानकेँ यात्रा करैत, योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' नाव पर बैसि कोसी नदी पार करबाक अद्भुत रोमांचक वर्णन कएलनि अछि। कोसीमे अनेक धारक समूह छैक । नाव पर बैसल धार गानब सर्वथा असम्भव। जकरा देखि लेखक लिखैत छथि– ''लागए जेना माता कौसिकी अपन सबटा केस छिड़िया देलखिन आ सबटा केस एक–एकटा धार भऽ गेलैक, धार आएल । तकरा बाद फेर कतेको । कोन धार मुख्य कोसी आ कोन शाखा उपशाखा से कहब कठिन । मुदा मलाह जे नाओ खेबेत छल ओकरा सबकेँ सबटा बूझल छलैक । जहिना धार बढ़ैत जाए तहिना नाओ सेहो आकार प्रकारमे पैघ भेल जाए । निकोनमा बला नाओ हमरे दलक लोकसँ भरि गेल छलैक । आब तऽ एहेन कतेक दल अँटैत छलैक । एकटा नाओ देखल जाहिमे बड़द सहित बैलगाड़ी चढ़ा देल गेल छलैक हमरा लेल ई नव अनुभव छल ।''[1]

प्रकृत अपन श्रृंगार स्वयं करैत अछि । एकर प्रसाधनमे नदी–पोखरि, चभच्चा, बाध–बोन, चर–चाँचर, गाछ–वृक्ष, फूल–पत्ती, मेघ, जीव–जन्तु आदिक समावेश, प्रकृति नदीकेँ आकर्षक आ विशिष्ट बनबैत अछि । वियोगी जी नावपर बैसल प्रकृति–सौन्दर्यक आनन्द लैत अपन नेनपनकेँ मोन पाड़ैत छथि । अपन वर्णनक क्रममे लिखैत छथि–

''जतेक बेर नाओ पर चढ़ी सब महिलागण प्रार्थना करए लागथि– ''हे कोसिकी मैया सनेस देखाउ'' । एकर माने हमर नहि बुझियैक । मुदा एक बेर माछ जकाँ एकटा पैघ जन्तु पानिसँ ऊपर उठल आ थुथुन देखा कए फेर डूबि गेल । सबकेँ बहुत खुशी भेलैक जे कोसी मैया सनेस देखा देलखिन । हम किछु नहि बुझलियैक आ नैया सँ पुछलियैक जे ओ की छलैक । ओ कहलनि जे कोसी मैयाक सनेस 'सोँस' छलैक ।''[2] प्रकृतिक ई छवि मात्र थल पर नहि छिड़ियाएल अछि, अपितु जल, थल, नभ सबकेँ आच्छादित कएने अछि । बाढ़िक बाद स्वच्छ जल आ ओकरा चीड़ैत नाओक दृश्यक अद्भुत वर्णन कएल गेल अछि । तहिना अन्तहीन चऽर आ तकर पद–यात्राक वर्णन रोमांचसँ भरि दैत अछि । महासिहोलक अंझ्गान बाट । रातुक समय। बालुकामय भूमि । कत्तौ–कत्तौ बस्तीनुमा बथनिआँक आवास । अमावस्याक राति । ओहि सुनसान प्रांतक रस्ताक खियाल, टिमटिमाइत इजोत मात्र । कत्तौसँ हुल्ल दन बनैया सूगर आगूसँ निकसि जाइत कोसिकन्हाक ई वर्णन, ककरा रोमांचसँ भरि नहि देतै ? हिनक 'दोसर जन्म' शीर्षकसँ 'बदरी–केदार' यात्राक वर्णनमे यमुनोत्री होइत 'केम्पटी जल प्रपात'क सौन्दर्य–वर्णन कएल गेल अछि । एहिसँ पूर्व एतेक ऊँच जलप्रपात देखबाक मौका नहि लागल छलनि । गाड़ी रोकि जलप्रपात देखबा लए सड़कसँ नीचाँ उतरि ओहि स्थल धरि पहुँचैत छथि, जतय झरनाक जल जमा होइत छलैक । ताहिठाम किछु लोक जलक्रीड़ा आ स्नान करैत आनन्दित छल । ई सभ स्नान तऽ नहि कएलनि मुदा ओहि शीतल जलमे पैसि पएर धोलनि । ड्राइवर जल पीबाक लेल रस्तामे दोसर ठामक झरनासँ जल अनलक । जकर वर्णन लेखक एहि प्रकारेँ करैत छथि– ''आगूक रस्तामे एकठाम ड्राइवर गेल जल भरवाक लेल । कहलक ई जल शुद्ध आ' शीतल दुनू छैक । पहाड़ी इलाकामे कतोक सतहके चट्टान आ' गाछ–वृक्षक जड़िसँ छनाइत जल सत्ते शुद्ध भइए जाइत हेतैक । बुझा गेल नेचुरल मिनरल वाटर एकरे ने कहैत छैक ।''[3] प्रकृतिक एहि अद्भुत घटनाकेँ जे नजदीकसँ देखि लेलक, ओकर मनुक्खमे जन्म लेब सार्थक भऽ जाइत छैक ।

प्रकृति स्वभावसँ मनुक्खक संग पुरनिहारि रहलीह । प्रकृतिक संतुलित आ सात्विक साहचर्य मनुक्खकेँ सुखद जीवन दैत रहलि । ई सौन्दर्य ईश्वरीय सृष्टिक अलौकिक आ विलक्षण कलाक नमूना थिक । जे एहि कलाकेँ ह्रदयंगम कए लैत छथि, वस्तुतः वएह रचनाकार थिकाह । पहाड़क सुरम्य घाटी, ओकर हिम–शिखर, कल–कल बहैत धार, झर–झर झड़ैत झड़ना, फल–फूलसँ भरल गाछ–वृक्ष, भाँति–भाँतिक फूल, ओहि पर मड़राइत तितली दूर–दूर तक पसरल बाधक हरीतिमा, अकासमे उड़ैत भाँति–भाँति चिड़इ, ओकर चहकब, सूर्योदय आ सूर्यास्तक अनुपम छटा, तारागणसँ सुसज्जित रातुक अकासमे चन्द्रमाक अलौकिक सौन्दर्य ककरो मनकेँ मोहि लेबाक सामर्थ्य रखैत छैक । मुदा अर्थ पिशाच ओहि सौन्दर्यकेँ देखि नहि पबैत अछि । ओकरा ह्रदयंगम करबाक बात तऽ दूरक वस्तु भेल, अनुभव धरि नहि कऽ पबैत अछि । आ ई बात जखन प्रथम दशकक यात्रा–साहित्यमे प्रकृतिसँ साक्षात्कार करबैत अछि तँ मोन जुरा जाइत अछि । एहि बदलल समयक वर्णन कए पंचानन मिश्र अपन कुम्भयात्राक परिप्रेक्ष्यमे प्रकृतिक ओहि दुश्मनक कुचेष्टा सेहो कएलनि अछि । त्रिवेणी संगमक अपरूब छटाक बीच अपराध–शास्त्र प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष पाश्विक प्रवृतिक गवाह दैछ । ओ पानि मिलल दूध बेचनिहारक रूपमे होअय आकि चुनरी–नारिकेर बेचनिहार, गंगाजीकेँ अर्पित नारीकेर छानि पुनः मुद्रा कमेनिहार किएक नहि होअय सभ चतुर उद्यमी बनि प्रकृतिक सौन्दर्यकेँ नष्ट करबामे तल्लीन अछि । जखन कि विदेश–यात्राक क्रममे अमेरिका यात्रा करैत कीर्तिनाथ झा प्राकृतिक सौन्दर्यकेँ नार्थ कैरोलिना राज्यक ग्रामीण इलाकाक अद्‌भुत प्राकृतिक दृश्यक चित्रांकन कएलनि अछि । ओ लिखैत छथि जे ''चैपल हिता शहरकेँ नार्थ कैरोलिना राज्यक ग्रामीण इलाका कहि सकैत छियैक । शहरक चारूकात खेती–बारी आ पशुपालन दूर–दूर धरि पसरल हरियरी । समुद्रक तरंग–जकाँ ऊपर नीचाँ होइत मैदान मकइक पैघ–पैघ खेत, सघन जंगल, सर्पाकार सड़क, आ' बीच–बीच कत्तौ–कत्तौ दूर–दूर पर आवास । आवास आ खेतीक अलग–अलग इकाइ बहुत पैघ–पैघ गाछ–वृक्ष पर भाँति–भाँतिक चिड़ै । खेत आ आवासीय परिसरमे हरिणक झुण्ड । सम्पूर्ण इलाका एकटा पैघ अभयारण्य जकाँ प्रतीत भेल ।''[4] देखबाक थिक जे प्रकृतिक कोरामे बैसल भारतक गाम एहि अमूल्य सम्पदाकेँ बिसरि, प्राकृतिक संतुलनकेँ बिगड़बामे अपस्याँत अछि । शस्य–श्यामला भूमि बंजर हएबापर तुलल अछि । प्राकृतिक ई वरदान वर्तमानमे भू–क्षरण, पर्वत स्खलन आ असमय वर्षाक–चपेटमे आबि गेल अछि । जकर कारण थिक– अंधाधुंध वृक्षक कटाइ । वर्तमान परिस्थितिकेँ देखैत वन–संरक्षण अनिवार्य भऽ गेल अछि । मुदा लोक आबहु साकांक्ष भऽ जाय तखन । मानव प्रकृतिक अनुपम उपहारसँ परिचित रहैत, अपरिचित भेल जा रहल अछि । वैज्ञानिक अनुसंधान प्रकृतिक अनुकूल नहि जा रहल अछि । जकर एक मात्रा कारण प्रकृति–विरोधी दृष्टि अछि । मनुक्ख औद्योगिक विकासक क्रममे विनाशकारी डेग उठएबामे संकोच नहि करैत अछि । अनावश्यक आवश्यकता ओकरा आवश्यक बुझाइ लगलैक अछि । गामसँ बड़द बिलाएल, चिड़इक प्रजाति नष्ट होइत गेल खेत सभ रसायनिक खादसँ अपन प्राकृतिक हरीतिमासँ दूर होइत चल गेल। एकर बिनु परवाहि कएने ओ आत्मसुख चाहय लागल । आत्मोन्नतिक फेरमे प्रकृतिकेँ बिसरि विनाशक आमंत्रण करय लागल । मुदा एकर विपरीत विदेश प्रकृतिकेँ संरक्षित करबाक अद्‌भुत चेष्टामे लागल अछि । एहि यात्रा–वृतांतमे प्राकृतिक छटाक वर्णन एहि तथ्यकेँ सिद्ध करैत अछि । वियोगीजी अपन यात्राक क्रममे ओही प्रकारक एकटा गामक वर्णन कएलनि अछि जे अपन प्राकृतिक सुरम्यताकेँ कष्टमय जीवनक अछैत नष्ट नहि होअय देलक अछि । ई गाम पानिपर बसल अछि । गामक नाम थिकैक– 'काम्पोंग फलक' । ई पुबारि भाग, बंगलादेश आ म्यांमारक यात्राक क्रममे भेटल छलनि। एहि गामक सभ घर खुट्टापर ठाढ़ अछि । खुट्टाक आकार चालीस–पचास फुट ऊँचगर छैक । एकरा फ्लोटिंग विलेज कहल जाइत छैक । वर्षा ऋतुमे अधिकांश खुट्टा पानिसँ डूबि जाइत छैक घर धरि पहुँचबाक लेल, सभ घरमे काठक सीढ़ी लागल छैक । एहि गामक लोक मात्र माछक व्यापार कए जीवन गुदस्त करैत अछि । ओकर सभक जिनगी कष्टमय जरूर छैक । मुदा प्रकृतिक संग ओकर सभक तादात्म्य अद्‌भुत लागत । पानिएमे सम्पूर्ण जिनगी व्यतीत होइत छैक। नेना सभक खेलक मैदान पानिएमे एकर अछैत स्वच्छताक कोनो कमी नहि । नाओ पर पैखाना करबाक लेल जाएब, बाध्यता छैक । मुदा किन्हेर मे कतहु घिनाएल नहि भेटत। भारतमे जँ एहि प्रकारक जिनगी बितबय पड़ैक तँ, घारक किन्हेर पैखानासँ अबंच नहि, रहतैक ।

मध्यप्रदेशक यात्राक क्रममे कीर्तिनाथ झा मंगलनाथ महादेवक चर्चा करैत ओह परिसरक प्राकृतिक दृश्यावलीक विलक्षण चित्र उपस्थित कएलनि अछि । परिसरक नजदीकेमे नदी आ धानक खेत, अद्‌भुत कलात्मक ढंगसँ आस–पासक इलाका हरीतिमासँ सुसज्जित विहंगमक दृश्य उपस्थित कएने अछि । सूर्यास्तक समय पश्चिम क्षितिजपर निस्तेज सूर्यक पैघ लाल छवि क्षिप्रा नदीक जल सतह पर प्रतिबिम्बित होमय लगैत छैक, तँ लगैत अछि नदीक जल सूर्यसँ एकाकार भऽ गेल अछि । क्षिप्रा नदी शांत स्थिर जलपर सूर्यक दिव्य रश्मि मनमोहक लगैत अछि । नदीक कछेर सँ दूर क्षितिजपर सूर्यक लाल गोलाक प्रतिच्छवि समीपक धनखेतीसँ घनीभूत भऽ करिछौंह देखाए लगैत अछि । एहि स्थलक दृश्यावलीसँ मोहित लेखककेँ कवि कालिदासक मेघदूत मोन पड़ि जाइत छनि । जाहिमे उज्जैनक सूर्यास्तकालक वर्णन करैत कथानायक यक्षसँ मेघ कहौलनि अछि– ''सूर्यास्त कालक रक्ताभ अरुणक किरणसँ तोहर श्यामवर्ण शोणित टपकैत ओहन टटका गज–चर्म–सन भ' जयतह जेहन गज–चर्मतांडव नृत्यक समय शिव धारण करैत छथि ।''[5] एहि क्रममे लेखक शिमलाक सूयोदय–सूर्यास्तक दृश्यकेँ मोन पाड़लनि अछि । गहींर उपत्यकाक दोसर पार', दूर क्षितिज पर डूबैत सूर्यक दृश्य अनुपम चित्र उपस्थित करैत अछि । कतिपय लोक शिमला आ कन्याकुमारीक सूर्योदय–सूर्यास्तक दृश्य देखबा लए व्याकुल रहैत छथि । कारण समुद्रतट पर भोर आ साँझमे बेसीकाल मेघ उमड़ि प्रतीक्षारत पर्यटककेँ निराश कए दैत छनि ।

एहि तरहेँ कहल जा सकैत अछि जे यात्रा–लेखक लोकनि सम्पूर्ण आकांक्षाक संग प्रकृतिक विभिन्न स्वरूपकेँ रूपायित करबामे पाछू नहि छथि । प्रकृति, एक–दोसराकेँ जोड़ैत अछि, तोड़ैत नहि अछि । एहि रूपमे लेखक लोकनिक एहि प्रयासकेँ स्तुत्य कहल जा सकैत अछि । जखन प्राकृतिक छटा, ओकर अपरूप रूपकेँ मोन पाड़ल जाएत तँ 'विश्व दर्शन' (मुरारि मधुसूदन ठाकुर)क 'चेवी चेज'क पहिल दिन, आँखिक पटल पर वाशिंगटन डी.सी.क यात्रा वर्णन उभरि आओत । लेखक ओहि यात्राक्रममे चेवी चेज मैरीलैण्डक बारेमे लिखैत छथि– ''सघन वन प्रान्तरक माँझमे बसाओल गेल एहि सुन्दर आवासीय स्थलक कल्पना अवस्से कोनो तेहन अभियानी–कवि कयने होएत जकरा एहि सम्पूर्ण भूभागक नीक अवगति रहल हयतैक । अमेरिकाक स्थापनाक दुइ सय पूरि गेलाक बादो चेवी चेज सन स्थान देखि सहजहि ओ कवि–अभियानी, सैनिक–समाज नेता लोकनिक स्मरण भऽ जायत जनिका ओहिकालक बड़ पैघ अमेरिकन उपन्यासकार 'पायनीयर्स'क नाम देने छल । विशाल

जंगलक बीचोबीच कोना क' एहन राजपथसब, सुन्दर सुनियोजित बस्तीसब बसाओल गेल होयत, कोना कऽ सब तरहक आधुनिक सुखसुविधा सभहक ओरियान कयल गेल होयत, ई सबटा सोचिकऽ एहि निर्माता लोकनिक बुद्धि, सूझ–बूझ कला–कौशल आ अध्यवसायक कायल भऽ जाय पड़त ।''[6] एहि सुन्दर सजल उपनिवेशक बीच 'कौल्सटन ड्राइव' नामक सड़कक दुनू कात विशाल सघन वृक्षक पाँती, अगल–बगल आकर्षक मनोरम बँगला, चारूकात फुलबाड़ीक स्वर्गीय कल्पनाकेँ साकार करैत दृश्यमान हएत । भला, एहन मनोरम प्राकृतिक छठाक अवलोकन कएलाक बाद यात्राक सफलता पर गर्व कोना ने कएल जाए ? एहने मनोरम वर्णन हिनक 'केल्कहाइम–फ्रैन्कफुर्त'क एक प्राकृतिक दृश्यक अछि । केल्कहाइम जर्मनीक एक गाँव थिक । जतुक्का ई स्थल प्राकृतिक सौन्दर्यक अद्भुत रूप प्रकट करैत अछि । एक दिस भूमि नीचा दिस चल गेल आ जाहिमे सुन्दर हरियर घास उपजल आ दोसर दिस दृष्टिपात करू तँ छोट–छीन पहाड़ीपर सघन वन सजल । जेना विधाताक कुशल हाथ, रचि–रचिकए कलात्मक ढंगसँ एकरा रचने होअय । अहिना 'मशहदसँ तेहारान' यात्राक क्रममे बाटक वर्णन कएने छथि । भोरक समयमे चारू दिस गाछे–गाछ, झाड़–झंखाड़, खेत–पथार, बाड़ी–झाड़ी आ ताहि बीच घर–द्वारि तुषार धवलित अद्भुत प्राकृतिक दृश्य उपस्थित कएने छल । ठाकुर जी काबुलक पहाड़ीपर आच्छादित वर्फक शोभाकेँ निरखैत ओकर प्राकृतिक अद्भुत छटाकेँ देखि, मेघमालाक स्वरूप उज्जर ऊनक ढेरी सदृश लगलनि। एहने सन अनुभव डॉ. सुरेश्वर झाक 'द्वारका'क सूर्यास्त देखलापर होइत छनि । अंगरेज लोकनिक बनबाओल ई स्थल 'सनसेट' नामसँ जानल जाइत अछि । एहि ठाम समुद्रमे अस्ताचलगामी सूर्यक किरण जखन जल–स्पर्श करैत अछि तँ लागत जेना सूर्य अथाह सागरक पश्चिम क्षितिजपर जलसमाधि लऽ लेलनि अछि ।

एहि तरहेँ देखैत छी जे प्रथम दशकक यात्रा साहित्य प्राकृतिक सुषमाकेँ अद्भुत ढंगेँ अपनामे समाहित कएने अछि । जकर वर्णन लेखक ऊर्ज्वसित प्रतिभाक प्रतीक अछि ।

संदर्भ सूची :

1. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', 2022, देश–विदेश, अनुप्रास प्रकाशन, मधुबनी, पृ. 13–14
2. तत्रैव, पृ. 14
3. तत्रैव, पृ. 58
4. झा कीर्तिनाथ, लोहनारोडसँ लास वेगस, 2020, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृ. 228
5. तत्रैव, पृ. 113
6. ठाकुर मुरारि मधुसूदन, 2005, विश्वदर्शन, नवरत्न गोष्ठी, आदित्य सदन, मिश्रटोला, दरभंगा, पृ. 143